3

‘‘तत्पुरुष समास’’
तद्धितार्थादि तत्पुरुष समास

व्यधिकरण तत्पुरुष का लोचन से पर इस पाठ में आदि द्विगु समास का वर्णन किया जाता है। द्विगुसमास से आनुषङ्गिकता से ‘‘दिक्संख्ये संज्ञायाम्’’, ‘‘तद्धितार्थोन्तरपदसमाहारे च’’ ये दो सूत्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यहाँ समानाधिकरण तत्पुरुष का वर्णन किया जा रहा है। जिस तत्पुरुष में समस्यमान पदों की समान विभक्तियाँ होती हैं वह समानाधिकरण तत्पुरुष है। समानाधिकरण तत्पुरुष की ‘‘तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः’’ इससे कर्मधारय संज्ञा होती है। इसके बाद नञ् समास का वर्णन इस पाठ में है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- दिकपूर्वपद और संख्यापूर्वपद समास को जान पाने में;
- समानाधिकरण तत्पुरुषविधायक सूत्रों को जान पाने में;
- उपमित समास को जान पाने में;
- नञ–समास को जान पाने में;
- सूत्र सहित समासों को जानकर स्वयं समास कर पाने में;
- साहित्य आद्य अध्ययन काल में पाठ में स्थित समस्त पदों का समास जान और निर्णय कर पाने में।

(3.1) ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' (2.9.50)

सूत्रार्थ–दिशावाचक और संख्यावाचक को सुबन्त समानाधिकरण को सुबन्त के साथ संज्ञा में गम्यमान होने पर ही तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या–यह नियम सूत्र है। इस सूत्र से संज्ञा में ही दिशासंख्या वाचकों को सुबन्त के साथ समानाधिकरणतत्पुरुष समास होने का नियम है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ दिक्संख्ये प्रथमा द्विवचनात्त और संज्ञायाम् सप्तम्येकवचनान्त पद है। दिक् च संख्या च दिक्संख्ये इसमें इतरेतरयोग द्वन्द समास है। ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराण नवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस पूर्व सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। समानाधिकरणेन इस पद के द्वितीय अध्याय के प्रथमपादसभाति तक अधिकार है। समान एक अधिकरण कहा जाता है उसका वह समानाधिकरण है और उससे बहुव्रीहि समास होता है। एकार्थवृत्तित्वम् इति फलितम् (एकार्थवृत्तित्व ही फलित है)। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन सूत्र अधिकृत है। ''सुषामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। समानाधिकरणेन इसका विशेषण होने से सुपा यहां पर तदन्त विधि से सुबन्ते अधिकरणेन होता है। और सूत्र का अर्थ होता है। ''दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त को समानाधिकरण से सुबन्त के साथ संज्ञा में गम्यमान होने पर तत्पुरुष समास संज्ञा होती है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र से ही समास सिद्धि होने पर इस सूत्र का आरम्भ क्यों होता है और कहा गया है ''इस सूत्र को संज्ञा में ही समास किसलिए होता है'' इस नियम से। और दीक्षित के द्वारा कहा गया है'' अथवा संज्ञा में ही नियमार्थ सूत्र हैं।''

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है पूर्वेषुकामशयी। पूर्वा च असौ इषुकामशयी च लौकिक विग्रह में पूर्वा मु इषु कामी सु इस अलौकिक विग्रह में पूर्वा सु इस दिग्वाचक सुबन्त को इषुकामशमी सु इस सुबन्त के साथ प्रस्तुत सूत्र से देश विशेष संज्ञा गम्यमान होने पर तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद ''प्रथमानिर्दिष्ट समास उपसर्जनम्'' इस समास विधायक सूत्र में दिक् इसका प्रथमानिर्दित्व से और उसके बोध्य का पूर्वा सु इस दिशावाचक का उपसर्जन संज्ञा में ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे इसका पूर्व निपात होता है। इसके बाद ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इस सूत्र से पूर्वा सु इषु कामशमी सु इय समास का प्रातिपडिकत्व होने से ''सुपो धातु प्रतिप्रातिपदिकयो:'' इस सूत्र से सुप् के दो सूत्रों का लोप होने पर पूर्वा इषु कामशमी होता है। इसके बाद पूर्व इषुकामशमी होता है। इसके बाद ''आद्गुण:'' इस सूत्र से पूर्व शब्द के वकार के उत्तर के अकार का इषुकामशमी इसका अकार और इकार का गुण एकादेश होने पर एकार के सर्व संयोग होने पर पूर्वेषुकामशमी रूप निष्पन्न होता है। पूर्वेषुकामशमी इसके प्रातिपडिकत्व अहाति से इसके बाद सु प्रत्यय की प्रक्रिया होने पर पूर्वेषुकामशमी रूप निष्पन्न होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये और यह सूत्र कितने प्रकार का होता है।

टिप्पणियाँ

2. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

3. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र के दिशावाचक का समासे उदाहरण दीजिये?

4. ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र का संख्या वाचक से समास में क्या उदाहरण है?

(3.2) ''तद्धितार्थोत्तर पद समाहारे च'' (2.1.51)

सूत्रार्थ–तद्धितार्थ विषय में और उत्तरपद में (चारों ओर) परित: और समाहार में वाच्य में दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त को समाधिकरण सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से तत्पुरुष समास होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। और यही अव्ययीपर है। तद्धितार्थश्च उत्तरपदञ्च समाहारश्च इति तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारं जिसमें समाहारद्वन्द है। तद्वितार्थ उत्तरपद में और समाहार में यही अर्थ है। एका भी सप्तमी यहाँ विषयमेड से है। तद्वितार्थ में यहाँ वैषयिक अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। अत: तद्धित अर्थ विषय में अर्थ है **पर्यवस्यति।** तद्धित अर्थ में भविष्यत्तद्धित जन्य ज्ञान विषय होने पर यह होता है। उत्तर पद में यहाँ परसप्तमी, उससे उत्तरपद में **परत:** यह अर्थ ग्रहण किया जाता है। यहाँ पर और समाहार में वाक्याधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। उससे समाहार में वाच्य होने पर यह अर्थ प्राप्त होता है।

''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'', ''विभाषा'' ये चारों सूत्र अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामश्रितेपराङ्गवत्स्वरे'' इस पद की अनुवृत्ति होती है। ''पूर्वकालैसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरण से ''दिक्संख्ये संज्ञायाम्'' इस सूत्र से दिक्संख्ये की अनुवृत्ति होती है। और सूत्रार्थ होता है ''तद्धितप्रत्ययार्थ विषय में और उत्तरपद में परे और समाहार में वाच्य में दिशावाची और संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है, वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

और इस समासविधायक सूत्र की पाँच प्रकार से समास विधायक सम्भव होता है।

(क) तद्धितार्थ विषय में दिशावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से

(ख) तद्वितार्थ विषय में संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से

(ग) और उत्तरपद में चारों ओर दिशावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से

(घ) और उत्तरपद में चारों ओर संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त से।

(ङ) और समाहार में वाच्य होने पर संख्यावाची सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है। और वह तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं। उनमें तद्वितार्थ विषयें दिक्समास का उदाहरण है यथा पौर्वशाल। उसी प्रकार पूर्वस्यांशालायां भव इस लौकिक विग्रह में पूर्वा ङि

शाला दि इस अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से पूर्वा ङि इस दिशावाचक सुबन्त को प्रस्तुत सूत्र से ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः'' इस भव अर्थ में तद्धित अर्थ में विषय में शाला ङि इस समानाधिकरण का सुबन्त के साथ तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में अनुवृत्ति में दिक्संख्ये यहाँ पर दिक्पद की प्रथमानिर्दिष्ट रिक् बोध का पूर्वा ङि पद की उपसर्जन संज्ञा होती है। इसके बाद उसका पूर्व निपात होने पर पूर्वा ङि शाला ङि इस स्थिति होने पर समुदाय का समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् के ङि का लोप होने पर पूर्वाशाला होता है। तब पूर्वा शब्द के ''सर्वनाश्तो वृत्तिमात्रेपुंवद्भावः'' इस वार्तिक से पुंवदद्भाव होने पर निष्पन्न पूर्वशाला शब्द से ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायांञः'' इस सूत्र से अप्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर पूर्वशाला अ होता है। इसके बाद ''तद्धितेत्वाचामादेः'' इससे पूर्वशालाशब्द के आदि अच् का ऊकार की वृद्धि होने पर औकार होने पर पौर्वशाला इसके असंज्ञा होने पर पौर्वशालशब्द के प्रतिपादिकत्व होने से सु विभक्ति कार्य होने पर पौर्वशालः रूप सिद्ध होता है।

तद्धित अर्थ में विषय में संख्यातत्पुरुषसमास का उदाहरण है जैसे—षाण्मातुर। उत्तरपद में पर का दिक् समास का उदाहरण है पञ्चगवधनः। उत्तर पद में पर दिशावाचक के साथ समास का उदाहरण है पूर्वशालप्रियः समाहार वाच्य होने पर संख्यातत्पुरुष का उदाहरण है पञ्चगवम्।

पाठगत प्रश्न-2

5. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' यह किस प्रकार का सूत्र है?
6. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
7. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र का तद्धितार्थ विषय में क्या उदाहरण है?
8. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र के उत्तरपद में पर होने का कौन सा उदाहरण है?
9. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' सूत्र के समाहार होने पर वाच्य का क्या उदाहरण है?

(3.3) ''द्विक्पूर्वपदादसंज्ञायांञः''

सूत्रार्थ—दिशावाचक पूर्वपद जिसके उस प्रातिपदिक से शौषिक में भव अर्थ में असंज्ञा में गम्यमान तद्धित को ञ प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या—यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से असंज्ञा होने पर गम्यमान होने पर तद्धित ञप्रत्यय होता है। यहाँ पूर्वशाला होने पर भव अर्थ में ञप्रत्यय विधान के लिए यह सूत्र प्रवृत्त होता है। यह सूत्र प्रयात्मक है। यहाँ दिक्पूर्वपदाद् असंज्ञायां ञः पदच्छेद है। दिक्पूर्वपदाद् इस पञ्चम्येकवचनात्तम् असंज्ञायाम् यह सप्तम्येकवचनान्तं ञः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। कि् दिग्वाचकं पूर्वपदं यस्य (दिशावाचक पूर्वपद है जिसका) यही बहुव्रीहिसमास है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''ङ्याप्प्रातितेपदिकात्'', ''तद्धिताः'' ये चारों अधिकृत सूत्र हैं। ''शेषे'' इस सूत्र से शेषे पद

टिप्पणियाँ

की अनुवृत्ति होती है। और सूत्रार्थ है:–''दिशावाचक पूर्वपद है जिसका उस प्रातिपदिक से शौषिक भव अर्थ में असंज्ञा का गम्यमान होने पर तद्दित से ञप्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है पौर्वशाल:। पूर्वस्यां शालायां भव इस विग्रह में प्रक्रियाकार्य में पूर्वशाला में पूर्वशब्द का दिशावाचक पूर्वशाला का दिशावाचक पूर्वपद से भव अर्थ में प्रकृत सूत्र से ञप्रत्यय होता है। ञ प्रत्यय का ञकार का ''चुटू'' इससे संज्ञा होने पर ''तस्यलोपऽ'' इससे लोप होने पर पूर्वशाला अ होता है। तब तद्धित पर में होने पर आदिवृद्धि में सूत्र प्रवृत्त होता है।

(3.4) ''तद्धितेष्वचामादे:'' (7.2.116)

सूत्रार्थ–ञित् (ञ की इत्संज्ञा) और (णकार की इत्संज्ञा) होने पर तद्धित पर में अचों में आदि अच् की वृद्धि होती है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से असंज्ञा होने पर गम्यमान तद्दित से ञ प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से असंज्ञा होने पर गम्यमान तद्धित से ञ प्रत्यय होता है। यह सूत्र त्रिपदात्मक है। यहाँ तद्धितंपु में अचाम् आदे: पदच्छेद है। ''अचोञ्णिति'' इस सूत्र से अच: ञ्णिति इन दो पदों की अनुवृत्ति होती है। मृजेर्बृद्धि:'' इस सूत्र से वृद्धि पद की अनुवृत्ति होती है। ''अङ्गस्य'' यह अधिकृत सूत्र है। ञ् च ण् च ञ्णौ, ञ्णौ इतौ यस्य स ञ्णित तस्मिन् इतरेतरद्धन्दगर्भ बहुव्रीहिसमास है। (ञ और ण् की इत्संज्ञा हुई है जिसमें वही ञ्णित है। उसमें इतरेतरद्धन्दगर्भ बहुव्रीहि समास है) ञ्णित इससे तद्धितों में इसके अन्वय से उसका एकवचनात्व है। अनाम् इस निर्धारण में षष्ठी होती है। (अचाम् निर्धारणे षष्ठी) औरा सूत्र है ञित् और गित् तद्धित पर में अचों में आदि अच की वृद्धि होती है।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है जैसे–पौर्वशाल: पूर्वस्यां शालायां भव: इस विग्रह में प्रक्रिया अर्थ में निष्पन्न दिशावाची पूर्व पद से पूर्वशाला इस प्रातिपदिक से ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायांञ:'' इससे ञ प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होने पर पूर्वशाला अ होता है। तब प्रकृत सूत्र से तद्धित में ञित् ञ प्रत्यय होने पर पूर्वशालाशब्द के आदि अच के ऊकार का वृद्धि होने पर औकार में पौर्वशाला अ रूप होता है। इसके बाद पौर्वशाला इसका ''यचिभम्'' इसमें भ संज्ञा होने पर ''यस्थेति च'' इस सूत्र से ञसंज्ञक आकार का लोप होने पर पौर्वशाल् अ होने पर सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न पौर्वशालशब्द के प्रातिपदिकत्व से इसके बाद सु विभक्ति कार्य होने पर पौर्वशाल: रूप सिद्ध होता है।

पञ्च गाव: धनं मस्य इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् जस् गोजस् धन सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि समास होने पर समुदाय का समास होने पर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुप् का लोप होने पर पञ्चन् जो धन रूप बना। यहाँ धनशब्द में उत्तर पद पर से ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इस सूत्र से बहुव्रीहि गर्भ में संख्या वाचि पञ्चन शब्द का समानाधिकरण गो पद से साक (साथ) विकल्प के साथ अवात्तर तत्पुरुषसमास में प्राप्त होने

पर ''द्वन्दतत्पुरुषयोरुणरपदे नित्यसमासवचनम्'' इससे नित्य समास होने पर पञ्चन् का उपसर्जन से पूर्व निपात होने पर ''न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' इससे लोप होने पर पञ्च गो धन इस (दशा) स्थिति में समासान्त विधायक सूत्र प्रवृत्त होता है।

(3.5) ''गोरतद्धितलुकि''

सूत्रार्थ–गो शब्द से तत्पुरुष से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। तद्धित लोप होने पर नहीं।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। अत्र गोः पञ्चमी एकवचनान्त पद और तद्वित का लोप नहीं होने पर सप्तमी एकवचनान्त पद है। न तद्धित लुकि अतद्धितलुकि यहाँ नञ्तत्पुरुषसमास है। ''तत्पुरुषस्याङ्गलेः संख्याव्ययादेः'' इस सूत्र से तत्पुरुषस्य पद की अनुवृत्ति होती है। और उस पद को पञ्चमी में विपरिणत गोः से विशेषण है। इसके बाद तदत्तविधि से गो अन्त से आता है। ''राजाहः सखिभ्यश्च'' इस सूत्र से टच् प्रत्यय की अनुवृत्ति होती है। ''समासात्तः'' यह अधिकृत सूत्र हैं। यही अर्थ है'' गो शब्द से तत्पुरुष से समासात्त टच् प्रत्यय होता है लेकिन तद्धित लोप होने पर नहीं।

उदाहरण–सूत्र का उदाहरण है ''पञ्चगवधनः''। ''तद्वितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' इससे समास प्रक्रिया कार्य में पञ्च गो धन इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से गो शब्द से पञ्च गो इस समासात्त को टच् प्रत्यय होता है। टच् का टकार का ''चुटू'' इससे चकार का और ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर पञ्च गो अ धन इस स्थिति में ''एचोऽयवायावः'' इस गो शब्द अवयव के ओकार का अवादेश होने पर सर्वसंयोग से निष्पन्न पञ्चगबधन शब्द से प्रक्रिया कार्य में सु प्रत्यय होने पर पञ्चबधनः रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-3

10. ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायांञः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
11. पौर्बशालः यहाँ किस अर्थ में क तद्धित प्रत्यय होता है?
12. ''तद्धिलेब्वचामादेः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
13. ''पौर्वशालः'' यहाँ किस सूत्र से और वृद्धि कैसे होती है?
14. ''गोरतद्वितलुकि'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
15. पञ्चगवधनः यहाँ पर टच् प्रतयय किस सूत्र से और कैसे होता है?

समाहार वाच्य होने पर इस प्रकरण के उपकारक सूत्रों का वर्णन किया जाता है–

(3.6) ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारय'' (9.2.42)

सूत्रार्थ–समानाधिकरण तत्पुरुषसमास कर्मधारय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से समानाधिकरण के तत्पुरुष के कर्मधारय संज्ञा होती है। यह सूत्र त्रि पदात्मक है। यहाँ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ये तीनों पद प्रथमा एकवचनान्त हैं। समानम् एकम् अधिकरणं वाच्यं ययोः समानाधिकरणे पद में बहुब्रीहि समास है। समानाधिकरण नाम समान विभक्ति का है। समानाधिकरणे पदे स्तः अस्य इति विग्रहे (समान अधिकरण पद में है इसके विग्रह में ''अर्श आदिभ्योऽच्'' इस सूत्र से मतुप् अर्थ में अर्श आदित्व से अच् होने पर समानाधिकरणः निष्पन्न होता है। समानाधिकरण नाम समानाधि करण परक है। एव इस सूत्र का अर्थ है–समानाधिकरण पदक तत्पुरुष समास कर्मधारय संज्ञक होता है।

कर्मधारय संज्ञा होने पर सत्यांकृष्णा चतुर्दशी इस विग्रह में ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' इस सूत्र से पूर्वकृष्णापद के कर्मधारय समास होने पर 'पुवद्भाव प्रक्रिया में कृष्ण चतुर्दशी रूप सिद्ध होता है।

कर्मधारयसंज्ञक की तत्पुरुष संज्ञा भी अभीष्ट है। अत एव ''आकडारादेका संज्ञा'' इस सूत्र के अधिकार में इस सूत्र का पाठ विहित नहीं होता है।

(3.7) ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' (6.3.42)

सूत्रार्थ–भाषित पुंसकत्व पर (नपुंसक) ऊङ के अभाव जिस तथा भूत की स्त्रीलिङ्ग के पूर्वपद का कर्मधारय होने पर जातीय में और देशीय के आगे पुंवाचक का ही (नपुंसक का) रूप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से पुंवद्भाव का अतिदेश होता है। इस सूत्र में दो पद पुंवत् और कर्मधारयजातीयदेशीयेषु हैं। पुंवत् यह वतिप्रत्यान्त अव्यय पद हैं और कर्मध ारयजातीय देशीयेषु सप्तमी बहुवचनात्त पद है। कर्मधारयश्च जातीयश्च देशीयश्च कर्मधारय जातीयाः तेषु कर्मधारयजातीय देशीयेषु यहां इतरेत्तरद्वन्दसमास है। (कर्मधारय और कर्मधारय और जातीय और देशीय कर्मधारय जातीयाः उनमें कर्मधारय जातीय देशों में इत्तरेतर द्वन्द समास है। यहाँ विषय भेद से सप्तमी से भी भेद है। कर्मधारये यहाँ अधिकरण सप्तमी है और जातीयदेशीय में यहाँ पर सप्तमी है। यहाँ ''स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु'' इस सूत्र से स्त्रियाः और भाषितपुंस्कादनूङ दो पदों की अनुवृत्ति होती है। यहाँ भाषितपुंस्कादनूङ् इस लुप्त षष्ठयेकवचनात्त समस्त पद को स्त्रियाः शब्द का विशेषण हैं। यहाँ निपातन से पञ्चमी का अलुक् और षष्ठी का लुक होता है। भाषितः पुमान् यस्मिन् सः भाषितपुंस्कः यही बहुव्रीहिसमास है। उस भाषितपुंसक से। ऊङोदुभावः अनूङ् यह अव्ययीभावः पद है। भाषितपुंस्काद् अनूङ् यस्यां सा भाषितपुंस्कादनूङ् तस्याः भाषितपुंस्कादनूङ्। अतः सूत्र का अर्थ है ''भाषित पुंसक से ऊङ अभाव है जिसमें तथाभूत स्त्रीलिङ्क पूर्व पद का कर्मधारय में जाति और देश के पर में होने पर पुंसकवाचक का ही रूप होता है।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् कृष्ण चतुर्दशी। कृष्णा चासौ चतुर्दशी च इस लौकिक विग्रह में कृष्ण सु चतुर्दशी सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषणं विशेषणं बहुलम्'' इससे तत्पुरुष समास होने पर, कृष्णा सु इसका पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सुब्लुकि कृष्णा चतुर्दशी शब्द स्वरूप का एकदेशविकृतन्याय से समासतव की अक्षता से होने पर इसके बाद सु विभक्ति का विभक्ति कार्य होने पर कृष्ण चतुर्दशी रूप बना। जातीयर् प्रत्यय पर में पाचक जातीय और देशीभर प्रत्यय पर में पुंवद्भाव का पाचकदेशीया यही उदाहरण है।

3.8 ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' (2.1.12)

सूत्रार्थः–तद्धितार्थ और उत्तरपद समहार में इस सूत्र में उक्त तीनों प्रकार से संख्या पूर्व समास द्विगु समास (संज्ञा) होती है।

सूत्र व्याख्या–यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से संख्यापूर्व तत्पुरुष की द्विगु संज्ञा होती है। यह सूत्र द्वि पदात्मक है। यहाँ संख्या पूर्वः द्विगुः ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त पद है। संख्या पूर्वः पूर्वावयवः यस्य स संख्यापूर्व बहुव्रीहि समास है। (संख्या पूर्व में है जिसके वह संख्या पूर्व बहुव्रीहि समास है। ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' यहाँ उक्त तीन प्रकार संख्यापूर्वपदः समासः यहाँ संख्या पूर्व शब्द से ग्रहण किया गया। इस सूत्र का अर्थ होता है ''तद्धितार्थोत्तर पद समाहारे च'' इस तद्धित अर्थ विषय में, उत्तरपद पर में और समाहार में वाच्य होने पर जो संख्या पूर्वपद का समास होता है वह द्विगु संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का तद्वित अर्थ विषय में पञ्चकलापः उत्तरपद परे पञ्चगवधनः, और समाहार में वाच्य होने पर पञ्चगवम् उदाहरण बना। तथाहि पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गो आम् इस अलौकिक विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इससे समास प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न होने से गो शब्दान्त से पञ्च गो शब्द से ''गोरवद्धितलुकि'' इस सूत्र से टच् प्रत्यय होने पर पञ्च गो अ होता है। इसके बाद ''एचोडयवायावः'' इस सूत्र से गकार के उकार का ओकार के अब आदेश होने पर पञ्चगव होता है। ''तत्पुरुषः समानाधि करणः कर्मधारयः'' इससे कर्मधारय संज्ञा होने पर प्रकृतसूत्र से पञ्चन् संख्यापूर्वपद से पञ्चगण शब्द से द्विगु समास होता है। इसके बाद द्विगुसमास में विशेषकार्य बोध के लिए यह सूत्र प्रवृत्त है।

(3.9) ''द्विगुरेकवचनम्'' (2.4.1)

सूत्रार्थ–द्विगु अर्थ समाहार एकवत् होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से एकवद् भाव होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ द्विगुः एकवचनम् ये दो पद प्रथमा एकवचनान्त है। ''समाहार ग्रहणं कर्त्तव्यम्'' इस वार्तिक बल से सूत्र में समाहारः पद आता है। बक्ति इति विग्रह में ''कृत्यल्युटोबहुलम्'' इससे बहुलक से कर्त्ता में ल्युट् प्रत्यय होने पर नपुंसकत्व में वचनम् निष्पन्न होता है। एकस्य वचनम् (एक का वचन) एकवचनम् यही षष्ठीतत्पुरुषसमास है। एकस्य अर्थस्य प्रतिपादकः यही अर्थ है। (एक

टिप्पणियाँ

अर्थ का प्रतिपादक है)। समाहार अर्थ में जो द्विगु होता है वह एकवचन होता है यही सूत्रार्थ है।

उदाहरण–तथाहि पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गो आम् इस अलौकिक विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारेच'' इससे समास में प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न के पञ्चगव शब्द का ''संख्यापूर्वो द्विगुः'' द्विगु समास में प्रस्तुत सूत्र से एकवद् भाव होता है। इसके बाद सूत्र प्रवृत्त हुआ है–

(3.10) ''स नपुंसकम्''

सूत्रार्थ–समाहार में द्विगु और द्वन्द नपुंसक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से नपुंसकत्व होता है। यह सूत्र द्विपदात्मक है। यहाँ स नपुंसकम् दो पद प्रथमा एकवचनात्तपद है। यहाँ वह इस पद से समाहार अर्थ में द्विगु का और समाहारद्वन्द का ग्रहण किया गया है। और समाहार में द्विगु और द्वन्द को नपुंसक होता है यही सूत्रार्थ है।

द्विगु समास का तत्पुरुष भेद से ''परवल्लिङ्ंग द्वन्दतत्पुरुषयो:'' इससे प्राप्त द्विगु का और द्वन्द का परवलियङ्गता से अपवाद यही सूत्र हैं।

उदाहरण–पञ्चगवम् यह उदाहरण है। तथाहि पञ्चानां गवां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गो आम् इस अलौकिक विग्रह में ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' इससे समास प्रक्रिया होने से निष्पन्न पञ्चगवशब्द का ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' इससे द्विगु समास होता है। इसके बाद एकवद्भाव होने पर प्रकृत सूत्र से उसका नपुंसकलिंग होता है। उससे पञ्चगवशब्द से नपुंसक में सु प्रत्यय का अम् होने पर प्रक्रियाकार्य में पञ्चगवम् रूप निष्पन्न होता है। समाहार द्वन्द में इस सूत्र का उदाहरण है पाणिपादम्।

पाठगत प्रश्न–4

16. ''तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
17. ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
18. ''पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु'' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिये?
19. ''संख्यापूर्वोद्विगुः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
20. ''द्विगुरेकवचनम्'' सूत्र का अर्थ क्या है?
21. ''स नपुंसकम्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
22. द्विगु में एकवद्भाव का एक उदाहरण दीजिये?

(3.11) ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्''

सूत्रार्थ–भेदक भेद से समानाधिकरण के साथ बहुल को समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विशेषण विशेष्य समास होता है। तीन पदात्मक इस सूत्र में विशेषणम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। विशेष्येण यह तृतीया एकवचनान्त पद है। बहुलम् प्रथमा एकवचनात्त पद है। ''प्राक्कडारासमास:'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीन अधिकृत सूत्र है। ''सुबामत्तिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। ''पूर्वकालैसर्वजरत् पुराण नव केवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। विशिष्यते अनेन इति विशेषणम् (विशेषता बताई जाती है जिससे वह विशेषण है) अन्य से व्यावर्तक भेद है। जिससे त्रेदा जाता है वह व्यावर्त्यम् भेद्यं विशेव्यम् अत: इस सूत्र का अर्थ है ''भेदक समानाधिकरण भेद से बहुल को समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञा होती है।

''तत्पुरुष: समानाधिकरण: कर्मधारय:'' इस सूत्र बल से यह समास कर्मधारयसंज्ञक भी होती है। वा ग्रहण से ही सिद्ध सूत्र होने पर बहुल ग्रहण से सर्व उपव्यभिचार या अभिव्यभिचार है। तेन कृष्णासर्प: इत्यादि में नित्यसमास है। रामो जाम दग्न्य: इत्यादि में समास नहीं होता है।

उदाहरण–लीलोत्पलम् यहाँ इत्यादि उदाहरण है। नीलं च तदुत्पलम् इस लौकिक विग्रह में नील सु उत्पल सु इस अलौकिक विग्रह में विशेषण वाचक नील सु इस सुबन्त को समानाधिकरण से विशेष्य से उत्पल सु इससे सुबन्त से प्रस्तुत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञं होता है। इसके बाद समास विधायक सूत्र में विशेषणम् पद प्रथमानिर्देश से उनके बोध्य का नील सु इस पद की उपसर्जन से पूर्व निपात में नील सु उत्पलसु होता है। इसके बाद समुदाय का समास होने पर प्रातिपदिकत्व होने पर ''सुपोधातुप्रातिपतिकयो:'' इससे सुप् के सु द्वय का लोप होने पर नील उत्पल होता है। इसके बाद ''आद्गुण:'' सूत्र से अकार का और उकार के स्थान पर एकार एकादेश होने पर निष्पन्न नीलोत्पलशब्द का एकदेशविकृत न्याय से प्रातिपदिकत्व होने पर ''परवाल्लिंङ्ग द्वन्दतत्पुरुषयो:'' इस सूत्र से नपुंसक लिङ्ग में वर्तमान से इसके बाद सु प्रत्यय होने पर सु का अम् होने पर विभक्ति कार्य होने पर नीलोत्पलम् रूप सिद्ध होता है।

नील पद का (अनीलात् उत्पलाद्) अनील उत्पल से उत्पल शब्द का व्यावर्तकत्व से विशेषणत्व है। उसी प्रकार उत्पल पद अनुत्पला से नील को व्यावर्त उत्पल पद भी विशेषणत्व है। अत: उत्पल शब्द का पूर्वनिपात होना चाहिए यहाँ शङ्का (प्रश्न) उत्पन्न होता है। यहाँ समाधान है–जब तक जातिगुणक्रियावाची शब्दों के समभिव्यवहार में जातिवाचक ही विशेष्य है, अन्पद विशेषण स्वभाव से। यहां उत्पल शब्द का जातिवाचक से विशेषणत्व के अभाव से पूर्व निपात नहीं होता है। गुणशब्दों के गुण क्रिया शब्दों के समभिव्याहार में विशेषणविशेष्य का भाव नहीं होता है। यही नियम है। अत: गुणवाचकों का विशेषणविशेष्यभाव में खञ्जकुब्ज: कुब्जखञ्ज: ये दो रूप होते हैं। उसी प्रकार क्रियाशब्दों के भी समभिव्याहार में पाचकपाठक: पाठकपाचक: ये दो रूप हैं। तथा गुणक्रियाशब्दों के समभिव्याहार में खञ्चपाचक:, पाचकखञ्ज: ये दो रूप

हैं। सामान्य जाति विशेष जाति शब्दों के समभिव्याहार में तो विशेष जाति ही विशेषण होता है। जैसे–शिंशपावृक्षः इत्यादि में है।

(3.12) ''कुत्सितानि कुत्सनैः''

सूत्रार्थ–कुत्स्यमान सुबन्तों को कुत्सन सामानाधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह निधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ कुत्सितानि यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है और कुत्सन्नैः यह तृतीयाबहुवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसको ''विभक्तिविपरिणामेन कुत्सनैः'' इस विशेषण से समानाधिकरणों के द्वारा होता है। ''प्राक्कडाराल्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन सूत्र अधिकृत (अधिकार) सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् की अनुवृत्ति होती है। सुप् का तदन्तविधि में सुबन्तम् प्राप्त होता है। व्याख्यान से कुत्सितशब्द वर्तमान में क्त प्रत्यय होता है। कुत्सित का अर्थ कुत्स्यमान है। अतः इस सूत्र का यह अर्थ होता है ''फुल्स्यमान सुबन्त कुत्सन से समान अधिकरण (समानाधिकरण) से सुबन्त के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है वैयाकरणखसूचिः। वैयाकरण च असौखसूचिः च इति इस लौकिक विग्रह में वैयाकरण सु खसूचि सु इस अलौकिक विग्रह में कुत्स्यमानवाचक वैयाकरण सु सुबन्त को समानाधिकरण से खसूचि सु इससे सुबन्त के साथ तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद कुत्सित अर्थ का वैयाकरण सु का पूर्वनिपात में सु का लोप होने पर निष्पन्न वैयाकरण खसूचि शब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में वैयाकरण खसूचिः रूप निष्पन्न होता है। इसी प्रकार मीमांसकदुर्दुरुटः इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-5

23. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
24. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र में बहुलग्रहण का क्या फल है?
25. नीलोत्पलम् यहाँ नील शब्द का विशेष्य कैसे नहीं हुआ?
26. गुणक्रियावाचक समभिव्यहार में विशेषण विशेष्य भाव का उदाहरण दीजिये?
27. ''कुत्सितानि कुत्सजैः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
28. ''कुत्सितानि कुत्सनैः'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

(3.13) ''पापाणकेकुत्सितैः''

सूत्रार्थ–पाप शब्द और अणक शब्द को कुत्स्यमान (कुत्सित) समान अधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद है। यहाँ ''पापाणके'' यह प्रथमाद्विवचनात्त और ''कुत्सितैः'' तृतीया बहुवचनात्त पद है। यहाँ पर ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन से पद की अनुवृत्ति होती है। या हो रही है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीनों सूत्र अधिकृत हैं। ''सुबामश्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति हो रही है। सुप् का तदन्त विधि में कुत्सितैः विशेषण से सुबन्तैः प्राप्त हो रहा है। कुत्सितैः का अर्थ है कुत्स्यमानों से। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है–''पापशब्द और अणकशब्द को कुत्स्थमान समानाधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस से ही सूत्रकार्य में सिद्ध होने पर इस सूत्र से किसलिए (किमर्थम्) प्रश्न आता है। यहाँ इसका उत्तर है यह सूत्र पूर्व का अपवादभूत सूत्र है। यहाँ पापाणके यहाँ पर प्रथमान्त होने से पठित समास में उन दोनों शब्दों का ही पूर्व निपात होने से ऐसा हुआ।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् पापनापितः। पापः च असौ नापितः च इस लौकिक विग्रह में पाप सु नापित सु इस अलौकिक विग्रह में पाप सु इस सुबन्त को समानाधिकरण से कुत्स्यमान होने से नापित सु इस सुबन्त के साथ प्रा उक्त सूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। उसके बाद पाप शब्द का पूर्वनिपात होने पर सु प्रत्यय का लोप होने पर पापनापित शब्द से सु प्रत्ययप्रक्रिया कार्य में पानामितः रूप निष्पन्न होता है। इसी तरह अणककुलालः इसका उदाहरण है।

(3.18) ''उपमानानि सामान्यवचनैः''

सूत्रार्थ–उपमानवाची सुबन्तों को सामान्यवचन समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है। और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ पर ''उपमानानि'' यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है और सामान्यवचनैः यह तृतीयाबहुवचनान्त पद है। यहाँ पर ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला समानाधिकरणेन'' इस मूत्र से समानाधि करणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसके विभक्ति विपरिणामेन सामान्य वचनैः का विशेषण होने से समानाधिकरण ही होता है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीन सूत्र अधिकृत (अधिकार) हैं। ''सुवाममित्रे पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् का तदन्तविधि में समानाधिकरणैः अन्वय से सुबन्तैः पद प्राप्त होता है। उप पूर्वक भी धातु के करण में ल्युट् उपमान शब्द निष्पन्न होता है। उपमीयतें सदृशतया परिच्छिद्यते यैः

टिप्पणियाँ

तानि उपमानानि (उपमा दी जाती है समानता से चारों तरफ से जिससे वे हैं उपमान) सामान्य का भाव है सामान्यम्। ''साधारणो धर्मः यही अर्थ है। सामान्य उक्तियाँ ही सामान्य वचन हैं। उनसे द्वारा सामान्य वचनों द्वारा। (सामान्यम् उक्तवन्तः इति सामान्य वचनाः तैः सामान्यवचनैः। उपमान और उपमेय में जो साधारण धर्म है उसका विशिष्ट वचन ही उसका अर्थ है। जो शब्द पूर्व साधारण धर्म से मुक्त मनुप् अर्थी याच् प्रत्यय बल से तद्धित दृश्य में होते है वे ही सामान्य वचन है यही वैयाकरणों का सिद्धान्त है। अतः इस सूत्र का अर्थ है ''उपमानवाचक सुबन्त सामान्य वाचकों समानाधिकरण सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इस सूत्र से ही समास में उपमानवाचक के पूर्व निपात होने पर सिद्धि में यह सूत्र व्यर्थ ही कहा जाता है उपमानवाचकपद का ही पूर्व निपात हो जैसा इस सूत्र का अर्थ है। अन्यथा इन दोनों गुणवाचकत्त से विशेषण विशेष्य भाव में कामचर से खञ्जकुब्जः, कुब्जखञ्जः ऐसा इस नियम से आपत्ति होनी चाहिए।

उदाहरण–यहाँ इस सूत्र का उदाहरण है घनश्यामः। घन इव श्यामः (बादल के समान काला) इस लौकिक विग्रह में घन सु श्याम सु इस अलौकिक विग्रह में उपमानवाचक घन सु सुबन्त को समान अधिकरण से श्याम सु इस सामान्य वचन के साथ विकल्प से प्रकृतसूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसका समास विधायक शास्त्र में उपमान के प्रथमा के निर्दित्व से उसके बोध्य का घन सु इसका उपसर्जन संज्ञा में पूर्व निपात होने पर, समुदाय के समास से सुप् का लोप होने पर निष्पन्न घनश्याम शब्द से सुप्रत्यय प्रक्रिया कार्य में घनश्याम रूप निष्पन्न होता है।

घनशब्द के जलघरवाचक और श्याम शब्द के रामार्थवाचकता से समानाधिकरण नहीं है यह शंका है। इसका समाधान है घन पद घनसदृश में राम में हैं, श्यामशब्द भी श्याम गुण विशिष्ट में राम में समानाधिकरण्य है।

पाठगत प्रश्न-6

29. ''पापाण के कुत्सितैः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
30. ''पापाणके कुत्सितैः'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?
31. ''विशेषणं विशेष्येन बहुलम्'' इससे ही सिद्ध होने पर ''पाषण के कुत्सितैः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
32. ''उपमानानि सामान्यवचनैः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
33. ''उपमानानि सामान्य वचनैः'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?
34. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे ही सिद्ध होने पर ''उपमानानि सामान्यवचनैः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

टिप्पणियाँ

(3.15) ''उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्य प्रयोगे'' (2.1.15)

सूत्रार्थ–उपमेय सुबन्त को उपमान व्याघ्रादि से समानाधिकरण सुबन्त के साथ साधारण धर्म का प्रयोग होने पर विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ उपमितम् पद प्रथमा एकवचनात्त पद है। व्याघ्रादिभिः यह तृतीया बहुवचनात्त पद है। सामान्य प्रयोग होने होने पर सप्तम्येकवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसका विभक्ति विपरिणाम से व्याघ्र आदि विशेषण से समानाधिकरणैः होता है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीनों अधिकार (अधिकृत) सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् का तदन्त विधि में उपमितम् इस अन्वय से सुबन्तम् पद प्राप्त होता है। सुपा का तदन्तविधि में व्याघ्र आदि अन्वय से सुबन्तैः पद प्राप्त होता है। उपमित नाम ही उपमेय है। भूतकाल यहाँ दिखाई नहीं देता है। और उस सम्बन्धिशब्द से उपमान आक्षेपित होता है। आक्षिप्त उपमान के समान अधिकरण से और इसका व्याघ्र आदि शब्दों के साथ अन्वय होता है। और इस प्रकार समानाधिकरणैः-समानाधिकरणों द्वारा, उपमानैः=उपमानों द्वारा, व्याघ्रादिभिः=व्याघ्र आदि द्वारा, सुबन्तैः=सुबन्तों द्वारा। समान का भाव सामान्यम् होता है। साधारण धर्मः यही अर्थ है। सामान्य का अप्रयोगः सामान्याप्रयोगः, उसमें सामान्याप्रयोग में षष्ठी तत्पुरुष समास है। अतः इस सूत्र का अर्थ है–उपमेय सुबन्त को उपमान व्याप्रादि समानाधि करण सुबन्तों के द्वारा विकल्प से साधारण धर्म का अप्रयोग होने पर समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञकः होता है।

यहाँ उपमान और उपमेय में उपमान का ही पूर्व निपात होने पर उपमित का पूर्व निपात के विध ान के लिए यह सूत्र बना है।

उदाहरण–पुरुषव्याघ्रः इत्यादि सूत्र का उदाहरण है। पुरुष व्याघ्र इव इस लौकिक विग्रह में पुरुष सु व्याघ्र सु इस अलौकिक विग्रह में उपमेयवाचक पुरुष सु इस सुबन्त को समानाधि करणेन व्याघ्र सु इस उपमान वाचक सुबन्त के साथ विकल्प से प्रकृतसूत्र से तत्पुरुष समास संज्ञा होती है। इसके बाद पुरुष सु इस उपमेय के उपसर्जनत्व से पूर्व निपात होने पर सुप् लोप निष्पन्न होने पर पुरुषव्याघ्रशब्द से सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में पुरुष व्याघ्रः रूपं सिद्ध होता है। यहाँ सादृश्यबोधक शौपत्मिक साधारण धर्म के अप्रयोग से प्रस्तुत सूत्र से समास होता है।

सामान्य अप्रयोग में (सामान्याप्रयोगे) वचन से पुरुष व्याघ्र इन शूर इस विग्रह में उपमान उपमेय साधारण धर्म के शौर्य के प्रयोग से प्रस्तुतसूत्र से समास नहीं होता है। व्याघ्र आदि के आकृतिगणत्व से मुखपद्मम्, मुखकमलम्, करकिसलयम् इत्यादि भी सिद्ध होते हैं।

(3.15.1) ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्'' (वार्तिकम्)

वात्तिकार्थ–शाकपार्थिव (शाक और पृथु) आदि शब्दों के सिद्ध होने पर पूर्वपद में स्थित

उत्तरपदलोप का उपसंख्यान करना चाहिए।

वार्तिक व्याख्या:–''वर्णो वर्णेन'' सूत्रस्थ महाभाष्य में ''समानाधिकरणाधिकारे शाकपार्थिवादीनामुपसंख्यानमुन्तरपदलोपश्च'' वार्तिक विहित है। उसी वार्तिक का ही सञ्जीकरण से पूर्व उक्त वार्तिक आया है। शाकपार्थिवादीनां सिद्धि में दो बार समास होता है। प्रथम दो पद के समास से एक पद का निर्माण होता है। इसके बाद समस्त पद का अन्य समानाधिकरण पद के साथ कर्मधारय समास होता है। यहाँ कर्मधारय समास में पूर्ववद का उत्तरपद के इस पद से लोप नहीं होता है।

उदाहरण:–वार्तिक का उदाहरण है–शाकपार्थिव:। शाक: प्रिय: यस्य इति विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे समास होने पर शाकप्रिय: रूप होता है। शाकप्रिय: पार्थिव: इस लौकिक विग्रह में शाकप्रिय सु पार्थिव सु इस अलौकिक विग्रह में ''विशेषण विशेष्येणबहुलम्'' इस सूत्र से समास होने पर प्रक्रियाकार्य में शाकप्रिय पार्थिव शब्द निष्पन्न होता है। तत इस वार्तिक से पूर्वपद का शाकप्रिय इस उत्तरपढ़ के प्रियशब्द का लोप होने पर प्रक्रिया कार्य में शाक पार्थिव: रूप निष्पन्न होता है। इसका अन्य उदाहरण होता है। देवब्राह्मण:। देवानां पूजक: देवपूजक: (देवताओं के पूजक) देवपूजक, देवपूजक: ब्राह्मण: देवब्राह्मण:।

पाठगत प्रश्न-7

35. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

36. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

37. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र का क्या प्रयोजन है?

38. ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'' इस सूत्र में सामान्य प्रयोग में पद किसलिए कहा गया है?

39. ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानाम्'' इस वार्तिक का क्या अर्थ है?

40. ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानाम्'' इस वार्तिक का उदाहरण दीजिये?

(3.16) ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' (2.1.61)

सूत्रार्थ–सत्, महत्, परम, उत्तम, उत्कृष्ट समान अधिकरण पूज्यमान सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ सम्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: यह इतरेतर द्वन्दसमासनिष्पन्न प्रथमाबहुवचनान्त पद है तथा पूज्यमानै: यह तृतीया बहुवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका पूज्यमानै: इस अन्वय से विभक्ति विपरिणामेन समानाधिकरणै: होता है ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:''

ये तीन अधिकृत हैं। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप का तदन्तविधि में सन्यहत्परमोन्तमोत्कृष्टाः इस अन्वय से सुबन्ताः (सुप् प्रव्ययान्तपद) प्राप्त होते हैं। सुपा इसकी तदन्त विधि में पूज्यमानैः इस अन्वय से सुबन्तैः पद प्राप्त होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ है–(सन्यहत्परमोन्तमोत्कृष्टाः) सत्, महत्, परम, उत्तम, उत्कृष्ट आदि सुबन्त समान अधिकरण से सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है और तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे ही समास सिद्ध होने पर (सन्यहत्परमोत्तमोत्कृष्टानां) सन् (सत), महत्, परम्, उत्तम्, उत्कृष्ट आदि शब्दों को पूर्वनिपात नियमों के लिए यह सूत्र बना है।

उदाहरण–सद्वैद्यः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। सन् वैद्यः इस लौकिक विग्रह में सत् सु वैद्य सु इस अलौकिक विग्रह में सत् सु इसका समानाधिकरण से वैद्य सु इससे पूज्यमानवाचकों का सुबन्तों के साथ विकल्प से प्रकृतसूत्र से प्रक्रिया कार्य में सद्वैद्यः रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार महावैयाकरणः इत्यादि इसका उदाहरण है।

(3.16) ''वृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम्''

सूत्रार्थ–पूज्यमान सुबन्त को वृन्दारक, नाग, कुञ्चर आदि से समान अधिकरणों से सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ वृन्दारकनागकुञ्जरैः इस इतरेतरद्वन्दसमासनिष्पन्न तृतीया बहुवचनान्त पद है और पूज्यमानम् प्रथमैकवचनान्त पद है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका वृन्दारक नागकुञ्जर आदि अन्वय से विभक्ति विपरिणाम से ''समानाधिकरणैः'' होता है। ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'8 ये तीन अधिकृत सूत्र है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् इस तदन्तविधि में पूज्यमानम् इस अन्वय से सुबन्त प्राप्त होता है। सुपा का तदन्तविधि में (वृन्दारकनागकुञ्जरैः) वृन्दारक, नाग, कुञ्जर आदि से अन्तय से सुबन्तैः पद प्राप्त होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है–''पूज्यमान सुबन्त को वृन्दारकनागकुञ्जर समानाधिकरणों से सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–गो वृन्दारक इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। गौः वृन्दारक इव इस लौकिक विग्रह में गो सु वृन्दारक सु इस अलौकिक विग्रह में गो सु इस पूज्यमान सुबन्त को समानाधिकरण से वृन्दारक सु इससे सुबन्त के साथ विकल्प से प्रकृत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न से गोवृन्दारक शब्द से सु प्रत्यय होने पर गोवृन्दारकः रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार गोनागः इत्यादि इसका उदाहरण है।

(3.18) ''किं क्षेपे'' (2.1.6.4)

सूत्रार्थ–निन्दा में गम्यमान किम् अव्यय को समानाधिकरण सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समास होता है। इस सूत्र में दो पद है। यहाँ किम् अव्यय पद है। ''क्षेपे'' यह सप्तम्येक वचनान्त पद है। ''प्राक्कडारात्समास:'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुष:'' ये तीनों अधिकृत सूत्र हैं। युवामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवला: समानाधिकरणेन'' इस सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका सुपा यहाँ पर तदन्त विधि में सुबन्त से इससे अन्वय होता है। क्षेप: निन्दा को कहते है। अत: सूत्र का अर्थ होता है–निन्दा में गम्यमान किम् अव्यय को समानाधिकरण से सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् किंराजा। कुत्सितो राजा इस लौकिक विग्रह में किम् राजन् सु इस अलौकिक विग्रह में किम् इस अव्यय को निन्दार्थक समानाधिकरण से राजन् मु इस सुबन्त के साथ तत्पुरुष समास संज्ञा होती हैं इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न किंराजन् इससे सु प्रत्यय होने पर किंराजा रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न-8

41. ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

42. ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

43. ''सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टा: पूज्यमानै:'' इस सूत्र का प्रयोजन क्या है?

44. ''वृन्दारक नाग कुञ्जरै: पूज्यमानम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

45. ''वृन्दारकनागकुञ्जरै: पूज्यमानमृ'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

46. ''किं क्षेपे'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

47. ''किं क्षेपे'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

(3.11) ''प्रशंसावचनैश्च'' (2.1.66)

सूत्रार्थ–रूढ़ी से प्रशंसावाचक समानाधिकरण सुबन्तों से जातिवाचक सुबन्त को समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ प्रशंसावचनै: यह तृतीया बहुवचनात्त पद है और वह अव्ययपद है। प्रशंसां वचत्ति इति प्रशंसावचना: तै: प्रशंसावचनै: (प्रशंसा में वे बोलते है प्रशंसा वचन) रूढ़ी द्वारा प्रशंसा वाचकों

द्वारा यही अर्थ है। प्राक्कडारात्समासः'', ''सह सुपा'', ''तत्पुरुषः'' ये तीनों अधिकृत सूत्र हैं। ''सुबामन्त्रितेपराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''पूर्वकालैकसर्वजरूपुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन'' सूत्र से समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति होती है। और उसका ''प्रशंसावचनैः'' इस अन्वय से विभक्ति विपरिणाम से ''सपानाधि करणैः'' होता है। सुपा यहाँ तदन्त विधि में प्रशंसावचनों द्वारा अन्वय से युवन्तैः रूप होता है। ''पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिघेनुवशाबेहद्बष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रिया ध्यापकधूर्तैर्जातिः'' इस सूत्र से जाति की अनुवृत्ति होती है। जाति नाम जातिवाचक की है। उसका विशेषण से सुप् की तदत्तनिधि में सुबन्तम् रूप होता है। अतः सूत्र का अर्थ होता है- ''रूढ़ी से प्रशंसावाचक समानाधिकरण सुबन्तों से जातिवाचक सुबन्त को समास होता है और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

उदाहरण–यहाँ उदाहरण है तावत् गोतल्लजः तल्लजः च असौ गौः च इस लौकिक विग्रह में तल्लज सु गो सु इस अलौकिक विग्रह में प्रशंसावाचक तल्लज सु सुबन्त के साथ जातिवाचक गो.सु. सुबन्त को प्रस्तुत सूत्र से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है। इसके बाद प्रक्रिया कार्य में निष्पन्न, ''गोतल्लजशब्द से सु प्रत्यय होने पर गोतल्लजः रूप निष्पन्न होता है। उसी प्रकार से गोमतल्लिका, गोमचर्चिका, इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

(3.20) ''नञ्''

सूत्रार्थ–नञ् सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से नञ्तत्पुरुष समास होता है। इस सूत्र में एक पद है। यहाँ नञ् प्रथमा एकवचनात्त पद है। और ''प्राक्कडारात्समासः'', ''सहसुपा'', ''तत्पुरुषः'', ''विभाषा'' ये चार सूत्र अधिकृत सूत्र है। ''सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे'' इससे सुप् पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ ''प्रत्ययग्रहणेतदत्तग्रहणम्'' इस परिभाषा सुपा की प्रदत्त विधि में सुबन्तम् होता है। यहाँ नञ् इससे प्रसिद्ध अव्यय का ही ग्रहण होता है न कि ''स्त्रीपुंसाज्यांनञ्स्नजौ भवनात्'' इस सूत्र से विहित नञ् प्रत्यय का। और सूत्र का अर्थ होता है–नञ् सुबन्त के साथ समास होता है, और वह तत्पुरुषसंज्ञक होता है।''

उदाहरण–अब्राह्मणः इत्यादि इस सूत्र के उदाहरण हैं। न ब्राह्मणः इस लौकिक विग्रह में न ब्राह्मण सु अलौकिक विग्रह में न अव्ययपद है। और ब्राह्मण सु इस सुबन्त के साथ प्रकृत सूत्र से तत्पुरुष संज्ञा होती है। इसके बाद सूत्र में नञ् का प्रथमानिर्दित्व से उसके बोध्य का ''प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'' इससे उपसर्जन संज्ञा होने पर ''उपसर्जनंपूर्वम्'' इससे पूर्वनिपाल में न ब्राह्मण सु होता है। इसके बाद समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का लोप होने पर न ब्राह्मण होता है। तब नञः नलोप विधायक सूत्र प्रवर्त्तत होता है।

टिप्पणियाँ

(3.21) ''न लोपो नञः''

सूत्रार्थ–नञ् के नकार का लोप होता है उत्तरपद परे।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से नञ् के न लोप होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ ''न'' लुप्तषष्ठी एकवचनात्त पद हैं। नकार का यही अर्थ है। **लोपः** यह प्रथमा एकवचनात्त और निञ् षष्ठयत्त पद है। ''अलुगुत्तरपदे'' इस सूत्र से उत्तरपद में अनुवृत्ति होती है। और सूत्र का अर्थ होता है ''नञन् के नकार का लोप होता है उत्तरपद पर में रहने पर।''

उदाहरण–अब्राह्मणः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। न ब्राह्मणः इस लौकिक विग्रह में न ब्राह्मण सु इस अलौकिक विग्रह में नञ्तत्पुरुष समास में न ब्राह्मण इस स्थित में प्रस्तुत सूत्र से उत्तरपद ब्राह्मण शब्द में नञ् के नकार का लोप होता है। इसके बाद अ ब्राह्मण सर्वसंयोग होने पर निष्पन्न से अब्राह्मण शब्द से सु प्रक्रिया कार्य में अब्राह्मणः रूप होता है।

न अश्व। इस विग्रह में ''नञ्'' से समास में नकार का लोप होने पर अ अश्व इस स्थिति में अज आदि में उत्तरपद पर रहने पर नञ् समास में नुडागम विधायक यह सूत्र प्रवृत्त हुआ है-

(3.22) ''तस्मान्नुडचि''

सूत्रार्थ–लुप्त नकार से नञ् के उत्तर पद के अच् आदि का नुडागम होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से नुडागम होता है। इस सूत्र में तीन पद होते हैं। यहाँ इससे नुट् अचि यह पदच्छेद है। तस्मात् पञ्चमी एकवचनात्त है, नुट यह प्रथमा एकवचनात्त पद है और अचि सप्तम्येक वचनात्त पद है। ''न लोपो नञः'' इस सूत्र से नञ पद की अनुवृत्ति होती है और तत् पञ्चमी विपरिणाम में होती है। ''अनुगुत्तरपदे'' इस सूज से उत्तरपद की अनुवृत्ति होती है। ''यस्मिन् विधिः तदाहावल्ग्रहणे'' इस परिभाषा से अचि का तदत्तविधि में उत्तरपद में इससे अन्वय होने पर अजादौ उत्तरपद में यही अर्थ होता है। उससे इससे नञ के अन्वय से लुप्तनकार से नञः तात्पर्य होता है। अय निर्देश होने पर पञ्चमी निर्देश के बलीय से अजादि उत्तर पद में इसके पष्ठयत्त से विपरिणाम होता है। सूत्र का अर्थ होता है–''लुप्त नकारसे नञ् के उत्तरपद का अजादि से नुडागम होता है।''

उदाहरण–अनश्वः इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है। न अश्वः इस लौकिक विग्रह में न अश्व सु इस अलौकिक विग्रह में ''नञ्'' इस सूत्र से नञ् समास होने पर प्रक्रियाकार्य में न अश्व इस स्थिति में नञ् के नकार का लोप होने पर अ अश्व रूप होता है। इसके बाद अच् आदि के उत्तरपद का अश्व का लुप्त नकार से नञ् के नुट् होने पर नुट नुट् अश्व यह होने पर उकार का ''उपदेशेऽजनुनासिकश्त्'' इससे टकार का ओट ''चुटू'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर अ न् अश्वः इस स्थिति में सर्वसंयोग होने निष्पन्न अनश्व शब्द से सु प्रक्रियाकार्य में अनश्वः रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-9

48. ''प्रशंसावचनैश्च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

49. ''प्रशंसावचनैश्च'' इस सूत्र का उदाहरण दीजिये?

50. ''नञ्'' सूत्र का क्या अर्थ है?

51. अब्राह्मण: यहाँ नञ् के नकार का लोप किस सूत्र से होता है?

52. अनश्व: यहाँ नुडागमविधायक सूत्र क्या है?

पाठ सार

इस पाठ में ''दिक्संख्येसंज्ञायाम्'', ''तद्धिताथोत्तरपदसमाहारे च'' तत्पुरुषसमासविधायक दो सूत्रों की व्याख्या की गई है। यहाँ संख्यापूर्व का तत्पुरुष का द्विगुविधायक ''संख्यापूर्वोद्विगु:'' सूत्र, द्विगुसंख्या होने पर एक वह भाव विधायक का ''द्विगुरेकवचनम् सूत्र, ''स नपुंसकम्'' यह द्विगु का और नपुंसकत्वविधायक सूत्र की व्याख्या की गई है। यहाँ प्रसङ्ग ''दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञ:'' यह तद्धित ञ प्रत्यय विधायक सूत्र ''तद्धितेष्वचायादे:'' आदि अच की वृद्धिविधायक सूत्र प्रस्तुत किया गया है। पञ्चगवधन: इत्यादि में टच् प्रत्यय विधायक ''गोरतद्धितलुकि'' सूत्र की व्याख्या की गई है।

इसके बाद समानाधिकरण तत्पुरुष विधायक व विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'', ''कुत्सितानि कुत्सनै:'', ''पापाणके कुत्सितै:'', ''उपमानानि सामान्यवचनै:'', ''उपमितं व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे'', ''सन्महत्परमोत्तमो कृष्टा: पूज्यमानै:'', ''वृदारक नाग कुञ्जरै: पूज्यमानम्'', ''किं क्षेपे'', ''प्रशंसावचनैश्च'' इन सूत्रों की व्याख्या की गई है। इस अवसर पर ''शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपद लोपस्योपसंख्यानम्'' यह उत्तरपद लोप विधायक वार्तिक भी प्रस्तुत की गई है। समानाधिकरण तत्पुरुष का ''तत्पुरुष: समानाधिकरण: कर्मधारय: इससे कर्म संज्ञा प्रस्तुत की गई है। इसके बाद नञ् समास विधायक सूत्र ''नञ्'' की व्याख्या की गई है। इसके बाद नञ् के न लोप विधायक ''न लोपो नञ:'' सूत्र की व्याख्या की गई है। इसके बाद ''तस्मान्नुडचि'' नुडागम विधायक सूत्र प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''दिक्संख्येसंज्ञायाम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

2. ''तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

3. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

4. ''उपमानानि सामान्यवचनै:'' सूत्र की व्याख्या की गई है?

टिप्पणियाँ

5. ''प्रशंसावचनैश्च'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
6. ''नञ्'' सूत्र की व्याख्या की गई है?
8. ''समानाधिकरण: तत्पुरुष:'' विषय आश्रित टिप्पणी लिखो?
9. पौर्वशाल: रूप को सिद्ध कीजिये?
10. पञ्चगवधन: रूप को सिद्ध कीजिये?
11. घनश्याम: रूप को सिद्ध कीजिये?
12. अब्राह्मण: रूप को सिद्ध कीजिये?

''पाठगत प्रश्नों उत्तर''

उत्तर-1

1. पूर्वेषुकामशमी। नियमसूत्र।
2. दिशावाचक और संख्या वाचक सुबन्त को समानाधिकरण सुबन्त के साथ संज्ञा में गम्यमान होने पर तत्पुरुषसमास संज्ञा होता है।
3. पूर्वेषुकामशमी।
4. सप्तर्षय:।

उत्तर-2

5. विधिसूत्र
6. तद्धित अर्थ विषय में और उत्तरपद में **परत:** और समाहार में वाच्य दिशावाचक और संख्यावाचक सुबन्त को समानाधिकरण को सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुषसमास संज्ञा होती है।
7. पौर्वशाल:।
8. पञ्चगवधन:।
9. पञ्चगवम्

उत्तर-3

10. दिशावाचक पूर्वपद जिसका जिससे प्रातिपदिक शैषिक भवादि अर्थ में असंज्ञायां गम्यमान तद्धित ञप्रत्यय होता है।

11. पूर्वशब्द का दिशावाचक पूर्वशाला का दिव-पूर्वपद से इसके बाद भव अर्थ में प्रकृतसूत्र से ञप्रत्यय होता है।
12. ञित् और णित् तद्धित पर में अचों में आदि अच् की वृद्धि होती है।
13. ञित तद्धित पर होने पर अचों में आदि अच की ''तद्धितेष्वचामपदे:'' सूत्र से वृद्धि होती है।
14. गो शब्दान्त तत्पुरुष से समासान्त टच् प्रत्यय होता है तद्धित लोप होने पर नहीं होता है।
15. पञ्चगो गोशब्दान्त तत्पुरुष अत: इस गोरतद्धिबलुकि सूत्र से टच् प्रत्यय होता है।

उत्तर-4

16. समानाधिकरण तत्पुरुषसमास कर्मधारय संज्ञक होता है।
17. भाषितपुंस्कात्पर होने पर अङ अभाव जिसमें तथाभूत स्त्रीलिङ्ग का पूर्वपद का कर्मधारय में जातीय और देशीय परत: (आगे से) पुंवाचक का ही रूप होता है।
18. कृष्णचतुर्दशी
19. तद्धित अर्थ और उत्तरपद के समाहार में उक्त त्रिविध संख्यापूर्व: समास द्विगुसंज्ञा होता है।
20. दिग्वर्थ: समाहार एक समान होता है।
21. समाहार में द्विगु और द्वन्द नपुंसक होता है।
22. पञ्चगवम्।

उत्तर-5

23. भेदक भेद से समान अधिकरण के साथ बहुल का समास होता है। और तत्पुरुष संक्षक होता है।
24. कृष्णसर्प: इत्यादि में नित्य समास और रामो जामदग्न्य: समास का अभाव होता है।
25. जातिगुण क्रियावाची शब्दों के समभिव्यवहार में जातिवाचक विशेष्य अत्यन्त् विशेषण को स्वभाव से नियम से नील शब्द का विशेष्यत्व नहीं होता है।
26. शिंशपावृक्ष:।
27. कुत्स्यमान सुबन्तों को कुत्सन समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।
28. वैयाकरणखसूचि:।

टिप्पणियाँ

उत्तर-6

27. पाप शब्द और अणकशब्द कुत्स्यमान समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

30. पापनापित:।

31. यह सूत्र पूर्वसूत्र का अपवादभूत सूत्र है।

32. उपमानबाचक सुबन्तों के सामान्यवचनों से समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास होता है, और तत्पुरुष संज्ञक होता है।

33. घनश्याम:।

34. उपमानवाचक का ही पूर्व निपात है जैसे: स्थात तदर्थमिदं सूत्रम्।

उत्तर-7

35. उपमेय सुबन्त को उपमान व्याघ्रादि समानाधिकरण सुबन्तों के साथ विकल्प से समास होता है, साधारण धर्म का अप्रयोग होने पर और तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

36. पुरुषव्याघ्र:।

37. उपमान और उपमेय में उपमान का ही पूर्व निपात प्राप्त होने पर उपमित का पूर्वनिपात के विधान के लिए यह सूत्र है।

38. सामान्य व अप्रयोग होने पर वचन से पुरुष व्याघ्र इव शुर इस विग्रह में उपमान उपमेय साधारण धर्म का शौर्य प्रयोग से प्रस्तुत सूत्र से समास नहीं होता है।

39. शाकपार्थिवादीनां शब्दानां शाक, पृथु आदि शब्दों की सिद्धि होने पर पूर्व पद में स्थित उत्तरपदलोप का उपसंख्या न करना चाहिए।

40. शाकपार्थिव:।

उत्तर-8

41. सन् (सत्), महत्, परम्, उत्तम, उत्कृष्ट समानाधिकरण पूज्यमान सुबन्तों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

42. सद्वैद्य:।

43. ''विशेषणं विशेष्येण बहुलम्'' इससे ही समास सिद्ध होने पर सत्, यहत्, परम्, उत्तम, उत्कृष्ट शब्दों के पूर्वनिपात नियम के लिए यह सूत्र प्रवृत्त है।

44. पूज्यमान सुबन्त बृन्दारक, नाग, कुञ्जर समानाधिकरण सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

47. किं राजा।

टिप्पणियाँ

उत्तर-9

48. रूढ़ी से प्रशंसावाचक समानाधिकरण सुबन्तों से जातिवाचक सुबन्त को समास होता है, और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

49. गोतल्लजः।

50. नञ् सुबन्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

51. ''नञः'' सूत्र से नकार का लोप होता है।

52. ''तस्मान्नुडचि''।

तृतीय पाठ समाप्त